3. तृतीय अवस्था — शीतोष्ण चक्रवात — [illegible]

↳ वाताग्र के केन्द्र पर निम्नवायुदाब अथवा गर्तचक्र का विकास, जिसे भरने के लिए चारों ओर से हवाएँ चक्राकार प्रणाली में प्रवाहित होती हैं।

↳ उष्ण वाताग्र उत्तर की ओर तथा शीत वाताग्र दक्षिण की ओर बढ़ने लगता है।

↳ यह शीतोष्ण चक्रवात के परिपक्व होने की अवस्था होती है।

4. चतुर्थ अवस्था

↳ संरोधित वाताग्र का निर्माण होता है।

↳ संरोधन की प्रक्रिया पूर्ण होते-होते संपूर्ण चक्रवात अपने निचले भाग में ठंडी वायु से भर जाता है और अंततः चक्रवात का विघटन हो जाता है।

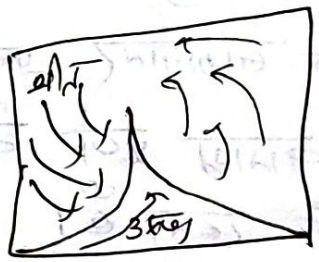

मौसमी प्रभाव

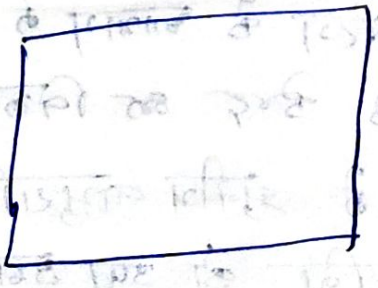

उष्ण चक्रवातों की संरचना

1. क्षैतिज 2. उर्ध्वाधर

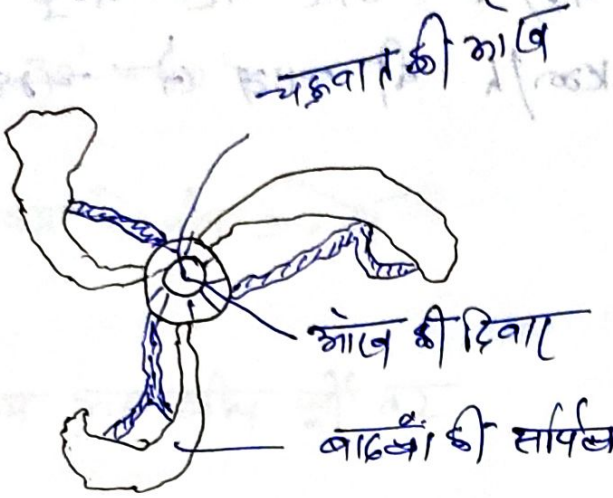

व्यास - 500 - 800 km.

↳ क्षैतिज के तीन भाग

(i) आँख

(ii) आँख की दिवार

(iii) बादलों की सर्पिलाकार पट्टी

(i) आँख

↳ उष्ण चक्रवात की सबसे सबसे बड़ी विशेषता इसकी आँख होती

↳ आँख के ऊपर का आसमान . साफ . स्वच्छ

↳ आँख के तापमान अधिक एवं आर्द्रता बहुत कम जिसके फलस्वरूप वर्षा नहीं होती एवं शांत होती है

(ii) आँख की दिवार :-

→ बाहर आने वाली वाली हवाएं केन्द्र में प्रवेश नहीं कर पाती और ऊपर की उठ जाती है ।

→ उष्ण चक्रवात के अंतर्गत दिवार के सहारे पट्टी के घिरे सबसे ज्यादा वर्षा ।

(iv) सर्पिलाकार पट्टी बादलों की-

↳ अंतरिक्ष से देखने पर केन्द्र की चारों तरफ एक सर्पिलाकार परिरेखा दिखाई देती जो निर्धारित नहीं होती है और यह केन्द्र के चारों ओर 25 km/h की चाल से चक्कर लगाता है

* ऊर्ध्वाधर संरचना

प्रभाव

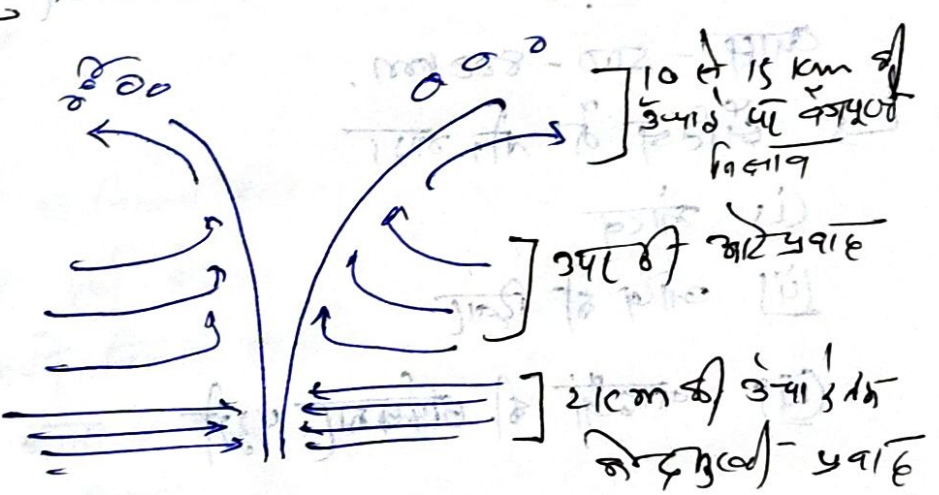

↳ अधिकतर किनारे पर एक ही दिन में 115 cm वर्षा

↳ हवाओं का वेग और दबाव जमा तब पर [illegible] 10 किमी तक परिवर्तित होते हैं

↳ सागरीय तरंगों को तरंगित होने से [illegible] है जिससे बाढ़ आ जाती है।